आत्मा में आनन्द मनाना

बाबा मुक्तानन्द की सिखावनियाँ

III

वह प्रेम का महासागर है। एक लहर की तरह, तुम आनन्द के महासागर में डूब जाते हो और महासागर ही बन जाते हो। प्रेम के महासागर में, बुलबुले की तरह तुम्हारा बार-बार उदय और विलय होता है। अहा, क्या मस्ती! अहा, क्या दिव्य और परमोत्कृष्ट आनन्द! क्या पूर्ण शान्ति और प्रेम! कैसा उन्मुक्त सन्तोष! वह सिद्धों का धाम है।

स्वामी मुक्तानन्द, *Secret of the Siddhas* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९४] पृ. २०।

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।